

हं नमः शिवाय ॥ अथ मरुती कर्म विधिः ॥ ॥ महादुर्गा पूजाः
विधिः ॥ ७ ॥ स्वप्न स्नान यावत् ॥ उका प्रका मिश्राला निर्मल न ॥
लं किनिश्चिन्ता कनायकः ॥ अश्रुयया इका ॥ विवर्तन लं सायाव
यं न ॥ थन लं स्व इदं धलिगुन कलि साखन स्वप्न स्नान यावत्
॥ स्वप्न सल यन याय ॥ कथं व धी खलु कूल कंदन कसू विवक
चन्दन सिन्दूर स्वप्न सं कृति वसं थन गान लय न याय ॥ थन स्व
प्न स्नान न ॥ अइ वालन स्वप्न स हरि न ॥ ॥ महादुर्गा उवा सगुण
स्वप्न स कनकं न यावत् लं साय ॥ ॥ अं अं की आचमनीयं साहा ॥ स्व

प्रसादनं ॥ उग्रवला स्वप्न दधु स कात्यायनी स्वप्न अवस ॥ उ
ग्रवती स्वप्न स्ववस ॥ श्रीरुगवती मधु महाकाल वलि थव स्वव
स ॥ कृष्णाल वलि थव अवस ॥ मूल वलि मधु स ॥ कलश सगुण
गणपति गुण स कोमारी वहि द्वा नां गदि ॥ रुट स नय ॥ अथ या
य ॥ थं छिली स उरु वाय ॥ थ छिली स सिधु अरु न लं छिका थ लं
या इ कारं ॥ ॥ ॥ मानव नि स र व सा ॥ कुरु काय ॥ उग्र वृवी उ वाय ॥
समय का खा व र र ना ॥ सकल नां ॥ थ व थ व थ य स काय ॥ ॥
दशाय उमानन कलं स्व स्नान कनकं न ॥ ॥ अथादि ॥ सूर्यादि ॥

याथ कुरुलुरुल संयाकि।

अस्म ७ श्री श्री स्वस्ति द व ग म हा ह्रीं श्री यो नमः ॥ ७ ॥ श्री
 यो नमः ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥
 अये ॥ ३ ॥ यादवी मधू के ट रु य म थ नी या व धु मू छा कि नी । या मा ना
 म हि षा सू न य म थ नी या व क वी जा य या । या सा णु रु नि णु रु दे ख
 द ल नी या द व द वा कि नी । सा द वी म म न रु य रु ज न नी च छी ज य या
 रु व ॥ सिद्धि न मु छि या न रु ख्या दि ॥ यथा वा रु न ॥ ॥ रु ना वा रु न ॥
 न ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥ श्री यो नमः ॥ ७ ॥
 अये ॥ ३ ॥ यादवी मधू के ट रु य म थ नी या व धु मू छा कि नी । या मा ना
 म हि षा सू न य म थ नी या व क वी जा य या । या सा णु रु नि णु रु दे ख
 द ल नी या द व द वा कि नी । सा द वी म म न रु य रु ज न नी च छी ज य या
 रु व ॥ सिद्धि न मु छि या न रु ख्या दि ॥ यथा वा रु न ॥ ॥ रु ना वा रु न ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मल्लसुमत्रहायाकाव यवमण्वरी जानाधनायाय ॥ ॥ ॐ नमः ॥
दविरुगवश्ये मधुसूता इका मरुत वृजात्माना जागृ ॥ ॐ यावच्चन्द्रो
कमावृण मही अग्निजलावरु । तावत्सु विवंकालं च वस्त्राणां हि
धारुव ॥ इग्नस्य यवमादवी इग्नवृष रुचं कवी । यन्मागायन ना
मय अचल त्वं हि नारुव ॥ सर्वलक्ष्मीपुष्टार्थ सर्वगत कया
र्थकं । अष्टम्यादिदशम्यान् इन्द्रविहि नारुव ॥ धनखलु पुनि
ष्टा ॥ चक्र सिधुत्वन काय ॥ ॥ वला अदिक दशसा मालिनी वरु
य ॥ मदशसा हि न निहाय ॥ न गामालिनी व ॥ ॐ नमः ॥

छिकाये ३ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीमहादेव वाय ॥ श्रीदेव उवाच ॥ जय त्वं भा
लिनी देवी निर्मलमलनाशिनी । स्नानशक्तिः पुष्टुदेवी वृद्धित्वं
कुरुवर्द्धिनी ॥ जननी सर्वरुगानां संसारसिन्धुवसिनी । मागा
वी नाववी देवी कारुण्यं कुरु वत्सवं ॥ जय नित्यं नमस्तु निर्मल
संरुगितं कामयी निःसृगाद्यं कुरु यावदाज्ञानशक्तिं मिच्छा कि
याममला । भृशं वखा सुखायूनः सुफनागन्तुवत्कृणुला काल
वृषा पुष्टुतादशकिमु संगीयसे । शसुवा आनि वृषा स्ववृषा निवा
मां ववा मां ववा दीमना कामिका विन्दु वृषा वधूना वृषा कनिष्ठ

प्रिकाषा अउ मका न उं का न उं का न सैया अ न गत्व मां यश ग । तत्व न
 यास्व नृपा रुगा का न व न त्वा यणी । आदि न ४ कौ न गत्वा रु वा या नि नृपा
 चणी क ४ सै माहिनी । नृद मागा गथान न न ग कि ४ सै स्र आ रि मु कि मु ना
 र्घा सनी । रा व रु नी मि था म्हा मि का स्का न रु गा रु वा त्या च । मृष्टी म्हा री
 की म स्या मि का नृग ही च कु वा चि ना त्वं म हा स न ४ सै र्ग नि नी धा उ
 म्हा का मृ ना वि नृ स द रु नी । स्य न्द द रु म्हा । म य स म्हा क य वा न न्द नि
 र्घा सि र्वा य द रे व वी रे व वा यान की ज नृ ग क । य वा माल नी नृद मा
 ल नी नृद मा गा चि ते । नृद ४ ग कि ४ ख नी सि धि या । म य वी सि धि मा गा

ग कि ४

विरु ४ ग द वा नी मि था न्या र्घ वी । वा न्वि गु द्वा मि वा मुं दि सि धि वा नी म्हा
 नी । मा रु का मि त्व मि द्वा क्रि या म रु ला सि धि ल श्री ४ वि रु मि ४ सै रु मि ४
 सै रु मि र्ग मि ४ सा म्हा मी र्वा मि र्वा ना य वी व क व रु क ला व र्वा नी । री
 म नृ पा म हा कृ ष्मा या ग पि या त्वं ऊ र्य र्वा क्रि गा नृद सै मा रु नी । त्वे न वा
 स्मा न न्द द व र्वा त्वं ग या ना रु गा । म रु मा ग्ना नृ गे म्हा लि रि म्हा रु रि
 र्वा वि या षा नृ व क ४ सै रु क ४ म्हा सै पू य न । द वी य र्वा मृ गे दि य पा ना त्व
 वे म्हा रु क का न का यो लि नी । उ क उ न दि उ न रि उ न व रु ४ र्वा व र्वा
 म्हा रु नी रु व ४ म्हा रु व र्वा म्हा ना व ४ रु र्वा रु रु रि रु य स म य मा सि

शेववी शेवव सुख वल्लगनाहं कमखा पवाधं शिव कमखा पवाधं नि
व । उर्वं मुनाम हादवी । शेववनम हात्मना । तनालि हं विनिहि य । नि
नत नाय वम ग्ववी ॥ यद न व प वि उ हं मा ग हा नी च य ह व ॥ क रु म
ह सि म द वि । क स्य वे नि श्व वं म न ॥ ॥ **रु गि नि व ग कि स म न र्व मा**
व नी द उ कं स मा कं ॥ ॥ **ग ना ख म ना स ॥** उं उं ग मृ त्य ह न ड ग व छु
ये अ सु या य रु ३ ॥ उं उं ग की बा ज प द ड ग व छु य ह द या य न म ॥
उं उं ग हं उ ग व छु य नि व स सा हा ॥ उं उं ग गी अ वि म दि नि ड ग व
छु य नि वा ये वो ष ६ ॥ उं उं ग की हं स दा व क व क उ ग व छु य क व

वा य हं ॥ उं उं ग धूं हं स ८ ड ग व छु य न ग ग या य व ष ८ ॥ उं उं ग मृ
त्य ह न ड ग व छु य अ सु या य रु ८ ॥ क ना हं ना स १ ॥ उ वं अं ग ना स १ ॥
मा ह का ना स १ ॥ ॥ **ग ना र्घ या ग ये जा ॥** अ न न द ग कि शे व वा न न द
वी ना धि य त ग म ॥ उ ल या ग रु हा वि का म ॥ या इ कां पू ज या नि ॥ अ
वा ह ना दि च न द ॥ ना क न वृ थ न म ॥ ॥ ध नू मू ल द ह य ७ ॥ ॥
उं उं ग की हं स व १ ॥ य स व २ घा व २ ग व ग नू २ नू य व त २ प चा त २
क रु २ व म २ द म २ घा त य २ वि घा क य २ वि रि २ हं ३ रु ८ स्वा हा ॥ को
को मा वी का वी च या इ कां ॥ उं ग हं अ न न द ग कि शे व वा न न द वी वा

नमः ॥ वृद्धवत्सलियुगा उद्यवत्सलियुगसम ॥ ॥ उं कौं जौं औं वृद्धवत्सलिये
 २ ॥ उं कौं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं कौं उं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं कौं जौं वृद्धवत्सलिये २ ॥
 उं कौं औं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं कौं उं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं कौं जौं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं
 कौं औं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं कौं जौं वृद्धवत्सलिये २ ॥ उं कौं औं वृद्धवत्सलिये २ ॥
 ॥ अनादिनादि ॥ मूर्धादनीय ॥ ॥ नमः कात्यायणीखलुस
 युगा ॥ जवस ॥ उं कौं सहदयाय पाइ कां ॥ उं कौं सनिवस पाइ कां
 ॥ उं कौं सनिखाये पाइ कां ॥ उं कौं सकवचाय पाइ कां ॥ उं कौं सन
 ययाय पाइ कां ॥ उं कौं सनयय रुपाय पाइ कां ॥ उं कौं सनयय सना

ये पाइ कां ॥ उं कौं सनिहासनाये पाइ कां ॥ उं कौं सनिहासनाये पा
 इ कां ॥ ॥ ध्यान ॥ उं कात्यायणी महादेवी रुमन्ध्रमाह वृषिणा ॥
 सर्वालंकालभराच यीनान्नरपयाधवा ॥ कालाकालिगमधुसू
 कां धीम्युतां विद्यांतिनी ॥ ध्यायमाना महादेवी सर्वगुरुकृत्यकवी
 ॥ ययायदित्ति गोदेवी कात्यायणी नमः ॥ उं कौं उं कौं सनीम
 हाइ ॥ उं कौं उं कौं कात्यायणी नमः ॥ ॥ उं कौं उं कौं सनीम
 नमः ॥ उं कौं उं कौं जयाये पाइ कां ॥ उं कौं उं कौं वि
 जयाये पाइ कां ॥ उं कौं उं कौं जयाये पाइ कां ॥ उं कौं उं कौं वि

॥ अनादिनादि ॥ मूर्धादनीय ॥ ॥ नमः कात्यायणीखलुस
 युगा ॥ जवस ॥ उं कौं सहदयाय पाइ कां ॥ उं कौं सनिवस पाइ कां
 ॥ उं कौं सनिखाये पाइ कां ॥ उं कौं सकवचाय पाइ कां ॥ उं कौं सन
 ययाय पाइ कां ॥ उं कौं सनयय रुपाय पाइ कां ॥ उं कौं सनयय सना

॥ अनादिनादि ॥ मूर्धादनीय ॥ ॥ नमः कात्यायणीखलुस
 युगा ॥ जवस ॥ उं कौं सहदयाय पाइ कां ॥ उं कौं सनिवस पाइ कां
 ॥ उं कौं सनिखाये पाइ कां ॥ उं कौं सकवचाय पाइ कां ॥ उं कौं सन
 ययाय पाइ कां ॥ उं कौं सनयय रुपाय पाइ कां ॥ उं कौं सनयय सना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धाम ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमामि विष्णुं धामनी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
युष्मत्संकाशं कलमध्विचिकथं ॥ सर्वलोकानसंयुक्तं हाठ
मालावर्तविनी ॥ अष्टादशतुलकाका ॥ यीनवकासुवाइहा ॥
खमहाकिनकथावाह ॥ अंकुशं मूला निव ॥ वज्रं किं वसुलाका ॥
वक्रं मूलं दक्षिण ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
युष्मत्संकाशं कलमध्विचिकथं ॥ सर्वलोकानसंयुक्तं हाठ
मालावर्तविनी ॥ अष्टादशतुलकाका ॥ यीनवकासुवाइहा ॥
खमहाकिनकथावाह ॥ अंकुशं मूला निव ॥ वज्रं किं वसुलाका ॥
वक्रं मूलं दक्षिण ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कालवृषहिरण्यवती। बुद्धादिमातृकाहिरिद्वेः पूजनीयामह
 र्णवी। ध्यायमानं सदा इह। नमामि सर्वदेवता॥ उं नमो
 रुगवती श्रीवृषिकाया यती रुम्भवती नमः॥ ॥ उर्वरिणी
 कलि ३॥ उं नमो अर्जुनाय २॥ उं नमो लोमाहव्यये २॥
 ॥ उं नमो उडुं कोमाये २॥ उं नमो जटायुवे २॥ उं नमो उडुं वासाय
 २॥ उं नमो उं नमो लोमाये २॥ उं नमो उं नमो वामुधाय २॥ उं नमो अर्जुने
 ४ महालक्ष्म्ये २॥ उर्वरलि ६॥ आवाहनादि। यानिमूर्तिदर्शय ७॥
 ॥ ॥ मूलखवसं मधुलसंधपूजा॥ उं नमो कौकिल ४ कुरु

या लाय पाइका॥ वरुष्का (ह) स्या ए॥ आग्ने॥ उं नमो अर्जुनाय कौकिल
 पूषवदुकनाथाय पाइका॥ ॥ उं नमो अर्जुनाय कौकिल
 ग (ह) ववाय पाइका॥ नैर्जत्य॥ उं नमो अर्जुनाय सिद्धि यागित्य ४ या
 इका॥ वायव्य॥ उं नमो अर्जुनाय सिद्धि वामुधाय पाइका॥ ॥ उ
 र्वरलि ॥ ॥ वरुष्का (ह) नादिदगला कपालपूजा॥ ॥ उं नमो
 लौलीलू ४ मूर्ति लोमाय वरुष्काय सुभाधियतय गजवाहना
 यनमः॥ उं नमो अर्जुनाय कौकिल ४ मूर्ति आग्नेय गकिरुक्काय नमः॥
 उं नमो अर्जुनाय मूर्ति यमाय वृद्धि दधुदुक्काय नमः॥ उं नमो अर्जुनाय

कौं कूं ४ कौं नेमृखा यखम रुसा यनम ४॥ उं उं ४ वां वां वूं वूं ४ मूं
व नृक्ष य वूं ॥ वाग रुसा यनम ४॥ उं उं ४ यां यां यूं यूं ४ मूं वायवूं
यायध ४ रुसा यनम ४॥ उं उं ४ सां सां सूं सूं ४ मूं कव वूं लायम
जरुसा यनम ४॥ उं उं ४ हां हां हूं हूं ४ मूं ॥ वाय विमूल रु
सा यनम ४॥ उं उं ४ लो लो लूं लूं ४ मूं ॥ धस च करुसा यनम ४॥
उं उं ४ वां वां वूं वूं ४ मूं ॥ दुद्वय वूं कमल रुसा यनम ४॥ ॥
नव वलि १०॥ ॥ वूं नगरुगवनी पूजा ॥ उं उं ४ हां हृदया यया
इका ॥ उं उं ४ हां निवस स्वाहा ॥ उं उं ४ हां निखाये पाइका ॥ उं उं ४ हां

कव वाय पाइका ॥ उं उं ४ हां नृगुया ययाइका ॥ उं उं ४ रु ४ ज्जुय
रुद पाइका ॥ उं उं ४ चक्रपमासनाये पाइका ॥ उं उं ४ चक्र मधुलाय
पाइका ॥ उं उं ४ चक्र मधुलाधियगय वक्रपमासनाये पाइका ॥ उं
उं ४ सूर्य मधुलाधियगय विष्णुपमासनाये पाइका ॥ उं उं ४ ज्जुनि
मधुलाधियगय रुद्रपमासनाये पाइका ॥ उं उं ४ हाकि मधुला
धियगय ॥ ग्यनयमासनाये पाइका ॥ उं उं ४ याम मधुलाधिय
गय सदानिवयमासनाये पाइका ॥ उं ४ सिंहासनाये पाइका ॥
शिया ३॥ उं उं ४ सरुगमलवनयी कौं रुगवले पाइका ॥ ॥

उर्ववलि ॥ ॥ गणेश कलश पूजा ॥ ॐ आधा वरा कय ल्यादि ॥ ॐ य
ग्रासनाय नमः ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ वलुका टिपुल गज चन्द्रा विक्
कलश वरा ॥ ॐ कास्यं लाचनं त्रिभिः विष्णुको हाव वा मधी ॥ ॐ स्म
गम साम हल श्री ॥ ॐ गमा मीला च न गयः मृत्पुत्रय समाला क
वददारुय गखधा ॥ ॐ दया कलहो ॥ ॐ नन्द सं धृक् विष्णुला कमाकि
धजः ॥ नाना रुवदा सा राग्यं हाव कयु वमहिता ॥ ॐ वलुत्ता वसं
यू ॥ ॐ संहिता वनमध्वनी ॥ ध्यान पूर्य नमः ॥ ॥ शिवा जलि ॥
ॐ शं सः मृत्पुत्रयाय नमः ॥ ॐ मृगल श्री गकि सहिताय नमः

॥ ॐ वर्वलि ॥ ॐ वृक्ष हानमः ॥ ॐ विष्णु वः ॥ ॐ वृद्धाय ॥ ॐ संपू
र्वकलशाय ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ धन मूढा ॥ ॥ मानव नि सः
वसा कुरु पूजा ॥ ॐ नैऋत दयाय या इका ॥ ॐ नैऋत विवसे वा
इका ॥ ॐ नैऋत वृगिखाये वा इका ॥ ॐ नैऋत कवचाय वा इका ॥ ॐ नैऋत
वो नैऋत याय वा इका ॥ ॐ नैऋत अस्त्राय रुट वा इका ॥ ॐ नैऋत काला
सनाय वा इका ॥ ॐ नैऋत आधा नादि अष्ट पूषिका सनाय ॥ ॐ नैऋत
आधना सनाय वा इका ॥ ॐ नैऋत अनका सनाय वा इका ॥ ॐ नैऋत लक्ष्मी
य वा इका ॥ ॐ नैऋत अंकलाय वा इका ॥ ॐ नैऋत नवासनाय वा इका ॥

उंउं अयमासनायपाइका ॥ उंउं अयमासनायपाइका ॥ उंउं अकग
वासनायपाइका ॥ ॥ ध्यान ॥ उंउं अलौकालसहिलादवी यम
नागसमयुता ॥ सर्ववत्तविचिगही कश्चिकारुगविगुहा ॥ अष्ट
दशरुजादिया ॥ नानापुरुषवेषधन ॥ नानावसधवीदवी उला
रु नानाविशग ॥ स्वमयागकगसर्व कपालकलिगधुजी ॥ व
धमकेगधपध ॥ नवचमववपुद ॥ रुटकोधनूयागध ॥ ख
वानसकमकुल ॥ मूलमूकनवेनध ॥ गजाहिवाकवकन ॥ म
कुलवहयितोय ॥ नहिरुगविसयिगा ॥ एसकियागकासध ॥

आमृतामृताकाहुवा ॥ उंउं अजौजौहुसुवपसुवत्यादि ॥ उंउं
अमृता ॥ हेववानन्दविद्यावाजग्यवीमृता ॥ उंउं अजौकौरायपाइका
॥ ॥ अष्टावधकलिपुजा ॥ उंउं अजौअष्टावजौधधान
कौजौ ॥ धानधानगवहुहुं सर्वगः सर्ववृ ॥ सर्वहुंहुंसः ॥ उंउं
उंउं अयडः पाइका ॥ उंउं अवककडिनी ॥ उंउं अलाकाकस्य
वीजौकामांगडाविलिक्कीमहाकारुका ॥ उंउं अविहीउंसोसः
पीपाइका ॥ उंउं अनमारुगवगी ॥ उंउं कडिकायेजौजौहुअष्टा
वअष्टावामृती ॥ उंउं अकिनि ॥ उंउं अविजयौइका ॥ सर्वार्थसिद्धियक

सहस्रिय
श्रीमद्दिग्विजयसूक्तप्रवादयाम् ॥ नृसिंहायतिप्रहसहस्रवृद्धदहयभीन
मोतसिंहवशांयाम् ॥

मोहनीपूजा ॥

294

2107 1

वानि मृदु र स्वाहा ॥ उं उं ग वां वी वूं वूं श्री वा नृ धी दु वी या इ कां ॥ उं
 ये ग को ना य पु द क्षुं उ ग च छु नि पृ थु म द नि कू कूं स दा व रु र त्वां मां
 इं सः मृ त्यु रु व न उ मः स्वाहा ॥ उं उं ग न मः धी को च न्द वा ग य न म
 ॥ धी को या इ कां ॥ उं उं ग न्दु र्ने न वा न न्दु धी म हा वि श्या वा ज म्भ
 नी द्म र्णी धी उ ग च छु ये य त्नु र्नी इ कां ॥ उं उं ग अं ॥ उं उं च छु दि
 था प म्भ इ कां ॥ उं अं अं य वृ क्ता ध्या दि था या इ कां ॥ हृ द या
 दि ॥ वृ आ वा रु ना दि ॥ या नि मू डा ॥ उ वं व लिं ॥ मू ल न ज प सा
 न ॥ उं न मः न्धु ति का ये ॥ उं लो कां सि न्दु न व र्णु ज व क्क स म नि रु

आ गि ति न्दु व र्णु स्या धु र्ना द त्या उ ज नि अ सि रु ल क ध वी वि न्दु
 का या ल रु का ॥ सिं ह र्ना सो म्या उ ग स क ल ज य पु दा स र्व सि धि थ
 का ली उं लो क्क पू ज नी य स क ल रु य रु ना ह रु द धी न मां रु ॥
 अ उ म न्धा दि ॥ ॥ अ थ का मा नी पू जा ॥ उं उं ग को हृ द या य पा इ कां
 ॥ उं उं ग को मि व स या इ कां ॥ उं उं ग कूं मि खा य या इ कां ॥ उं उं ग कूं
 क व चा य या इ कां ॥ उं उं ग को न उ रु या य या इ कां ॥ उं उं ग कूं अ क्ता
 य रु रु पा इ कां ॥ उं उं ग अ रु वृ थि ना स ना ये या इ कां ॥ उं ह कि रु का
 ये ॥ उं म य ना स ना ये ॥ उं र ना धि य के ये न मः ॥ उं क र्ण नू दी को

वा द वा य २ ॥ उं य न रु ह स्ता य २ ॥ उं अ थ क द ना य २ ॥ उं रु व म्ना य
२ ॥ उं मू ख क वा रु ना य २ ॥ उं सि धि ग (ल ग म य २ ॥ ध्वा न ॥ उं कौ मों गों
मूं ग १ ग १ य न य पा इ कां ॥ उ वं रि यां ऊ लि ३ ॥ उ वं व लि ॥ ॥ अ
थ क उ वा न पू जा ॥ उं अं अ नि ता रु रे व वा य २ ॥ उं वं नू नू रे व वा
य २ ॥ उं वं व छे रे व वा य २ ॥ उं कं का ध रे व वा य न म १ ॥ उं उं उ
न रु रे व वा य २ ॥ उं कं क ला ल रे व वा य २ ॥ उं रुं री ष ण रे व वा
य २ ॥ उं सं सं रु न रे व वा य २ ॥ ध्वा न ॥ उं उं अ कौ कौ कू कू १ अं कू
रु वा ला य पा इ कां ॥ उ वं रि यां ऊ लि ३ ॥ उ वं व लि ॥ ॥ व्रूं ॥

अ थ (ग म ग म स पू जा ॥ उं उं अं गूं ह द या य पा इ कां ॥ उं उं अं गूं मि न
स पा इ कां ॥ उं उं अं गूं मि खी ये पा इ कां ॥ उं उं अं (गूं क व वा य पा इ
कां ॥ उं उं अं (गूं न रु रे या य पा इ कां ॥ उं उं अं गूं अ म्ना य रु ह पा
इ कां ॥ उं रुं रु दा ये २ ॥ उं सं सं रु दा ये २ ॥ उं सं सं व ह्ये २ ॥ उं सं सं
म न स २ ॥ उं कौ कौ कूं क वि ना दि र्प व (म मा रु ह्या पा इ कां ॥ उ
वं रि यां ऊ लि ३ ॥ उ वं व लि ॥ आ वा रु ना दि ॥ ॥ अ थ स रु व पू
जा ॥ उं उं अं अं ह द या य पा इ कां ॥ उं उं अं अं मि न स पा इ कां ॥ उं उं
अं गूं मि खी ये पा इ कां ॥ उं उं अं उं क व वा य पा इ कां ॥ उं उं अं उं न रु

[illegible]

॥ उँ नै ऊं कौं कं कुं कृष्ण छ रे व वा य या इ कां ॥ नव गिर्यां ज लि
३ ॥ उर्व वलि ॥ ३ ॥ धन मूल न मा ह नी रु ॥ ॥ उँ डी अ आ रू
ॐ डु डु मृ मृ ॐ ॐ उँ उँ डी उँ उँ १ श्री यु या ग रु उ पा लाय अ नि
गां ग रे व वा य उक्ता य धा ग कि स हि नाय क द स्व दृ क स्त्राय धा
या गिनी ग ए सहि नाये सां गा य स ग ए स्य वि वा वा य ॐ दे म या
पू ष्ठ धू य दी प यू जा व लिंगू २ सर्वा थ सिद्धि म पु य कृ त्वा हा ॥
५ ॥ उँ डी कं खं गं रं टं श्री व रु ध रु उ पा लाय व रु रे व वा य मो रु ष्व
वी ग कि स हि नाय क लं उ रु कृ त्वा चि ता या गिनी त्या दि ॥ २ ॥ उँ डी

वं वं जं जं ॐ कालकण्ठपालाय चतुर्भुजवाय कोमावीणकि सु
हिनाय (म) कूनटकस्त्राय नी यागिनीत्यादि ॥ ३ ॥ ॐ कौं टं ॐ ॐ
ॐ अष्टासक्तपालाय काधर्भुजवाय वेसूवीणकि सुहिनाय
निचटकस्त्राय नी यागिनीत्यादि ॥ ४ ॥ ॐ कौं तं थं दं धं नं शी
यकीकण्ठपालाय डमकलेनवाय वावाहीणकि सुहिनाय
अष्टकटकस्त्राय नी यागिनीत्यादि ॥ ५ ॥ ॐ यं हं वं रं मं श्री च वि
गुणपालाय कपाललेनवाय ॐ त्राय नी णकि सुहिनाय द्म
नटकस्त्राय नी यागिनीत्यादि ॥ ६ ॥ ॐ कौं यं नं लं वं श्री उ कामेक

कण्ठपालाय लीषहलेनवाय चामूछाणकि सुहिनाय गालट
कस्त्राय नी यागिनीत्यादि ॥ ७ ॥ ॐ कौं शं वं सें हं श्री दवीकाटक
पालाय संहानलेनवाय महालक्ष्मीणकि सुहिनाय वटट
कस्त्राय नी यागिनीत्यादि ॥ ८ ॥ ॥ ॐ दं वलि ॥ ॐ कौं तं ॐ सर्व
कि वर २ सिद्धि स्त्राहा ॥ आवाहनादि मूला ॥ ॥ ॐ ॐ कौं कौं कौं ॐ ॐ
कण्ठपालाय पाइकां ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ कौं कलकण्ठवदकनाथयपाइ
कां ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ गौं गौं गौं श्री कलकण्ठवदकनाथयपाइकां ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
श्री सिद्धि यागिनीत्यपाइकां ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ श्री सिद्धि चामूछायेपाइकां

कां ॥ उर्ववलि ॥ आवाहनादि ॥ यानि मूला ॥ ॥ उं ओं आदि त्वादि
न वृद्धत्वा या इकां ॥ वलि ॥ उं उं अ अम्बि ना दि अ ह्य वि ष ति न क
ठत्वा या इकां ॥ वलि ॥ उं उं अ विरु मादि स फा वि ष ति या गत्वा या
इकां ॥ वलि ॥ उं उं अ भ वादि द्वा द श वा नि त्वा या इकां ॥ वलि ॥
उं उं अ मार्ग ति ना दि द्वा द श मा स त्वा या इकां ॥ वलि ॥ उं उं अ ह
म ना दि ष ह तु त्वा या इकां ॥ वलि ॥ ॥ ततः स्व वा म यु ज न ॥ उं उं
अ ओं महा मा या कृ ष्ण वि श्वा च कु ष्ण वी षी या इकां ॥ वलि ॥ उं उं
अ अघा त्र को ह सः आत्म न त्वा धि प त य क्रि या श क्रि य ना ये नि ष

ह सृ न्द वी या इकां ॥ उर्ववलि ॥ उं उं अ य व म घा त्र दू षा वा मू र्खी ली म री
व धी व म पि व हः ह व न नू नू की दू ङ्क रू दू ङ्क रू शारू दू रू वि श्वा न त्वा
धि प त य ह्य न श क्रि य ना ये नि षा वी कालि का द वी या इकां ॥ उर्ववलि
॥ उं उं अ नि व र त्वा धि प त य ॐ क्रा श क्रि अ य ना ये नि षा वी च छि
का द वी या इकां ॥ उर्ववलि ॥ ॐ नि ति का ध यू जा ॥ ॥ वलि वि
य ॥ उं उं अ स म य व लि ङ्ग दू २ स्वा हा ॥ उं उं अ अ ऊ वा दि व लि ङ्ग दू २
स्वा हा ॥ उं उं अ व नी ष या नि नी त्वा १ व लि ङ्ग दू २ स्वा हा ॥ उं उं अ स षि
या नि नी त्वा १ व लि ङ्ग दू २ स्वा हा ॥ उं उं अ महा व लि ङ्ग दू २ स्वा हा ॥

॥३॥ महा मायाय ॥०७॥ उं नमः शिवाय ॥ श्री गुरु उवाच ॥ नमा
तु नमः शिवाय सुश्रु दहय वायव । उका किनी विहृष्टात्मनादातु वि
नमालिनी । अदहा च न समुत्पन्नं अचर विम्वधा विधी । महा कुरु
लनी निश्च हं समध्याय वल्लि । सामसूर्या निमधसु धामया विप
वायव । उका वविश हावसु रुका नादा ह्वद्विगी । बाला गुणगधा
श्री अ न क वा कय यय । रुका नादा कला कसु यम किं उल्लमा वि
न । सका ना क महा माय वन दला क पूजिन । उके क नाहि मधसु
मर्मन के क रुदिनी ॥ अष्टा विंशत्कला धन रुदिनी वन न्य ॥

विश्रुत गानि रादवी । उज्ज्वल कटि नायु कि ॥ वक्ता विष्णु उवाच ॥
वृषीश्वर नमः सदा गिव ॥ उक्त यत्र महा पुना १ यादमूलं यवलिना
१ उला कुरु जननी देवी नमस्तु ग कि नू विगी । उज्ज्वल मधसु
मृधाल गुरु विगी । विन्दु मधग नादवी कटिल वा ह्वद्विगी ।
उवाच कर्त्तु का रास द्वादशा नावल निनी । उमा ह्वद्विगी ।
द्वादशा दिशु वचसं पूज्य पूज्या न वा वसु हं सा राधा धामा विधी
। लम्बा राधा वन मादवी दकि (ग) रु वम निनी । नागा (ग) रु स मू की (ग)
मधसु उवा विगी । हस्त स्वयं वन मादवी ताल मूर्ध्नि यवलिना ।

नादघृष्टाकसंघुष्टं लुण्ठकसमन्वितं । स्फुल्लसूत्रवसंश्लेषं ध
र्मो धर्ममयुद्धय । कार्यकान्तकर्मस्व विष्णुनादविग्रह । यमा
यमायनलुष्टं चैतन्यसाध्यं ध्रुवं । सर्ववर्धनीयद्वी लुङ्गकले
तिविग्रह । शक्तिमूलमहायूह विन्दुवीजसमन्वितं । अगनीयम
हाकाय संसाधारुवगाविधी । जयायविजयायैव जयकीचाय
वाजिगा । सुन्दरीवीजमधुसूत समस्तयायमायनी । वन्द्यमाककनी
यवी । आठगाकोशवस्तिन । रुदिनीशक्तिमूलन महायूहसमन्वि
तं । उमदीउमदीगोत्री मायायण्यवाहिनी । स्वच्छन्दरेववीयवी

सुखाधामनकरेववी । यक्षसद्वर्णरूपस्वा त्वयानुजायकीकिता ॥
अमृताशुत्ररुच्यलु नमः कायालिनीगिध । वृन्किनीमहामायन
मस्तुननरेववी । दंष्ट्राकरविशुद्धिदं गालकाकिरुयानन । नम
मिदवदवणी । अथावयानवृविधी । कालमुखीवगवणी । उमाद
वीनमासुग ॥ यागिनीचगियादवी । गोत्रीलक्ष्मीसवस्वणी । हंसस्व
वार्ध । गदवी । गममुखीगकिनालिनी । कायुकीगुरुगदवी । इन्द्र
कायायणीगिवा । निर्यन्त्रिनासमाख्याग । वकायैवाकवायना ॥ वा
मीमारुग्यनीचैव कोमावीवैपुवीकथा । वावाहीचैवमारुखी । वाम

ॐ रुयानना । यागानि त्वहि ददति कलाय कविरुविग । त्वदीयेव
 तु आग्नेयां । याम्यानेषु खेवानुधी । वायव्यां चैव कोवेनी । ॐ गानस
 मूदाहदा । प्रयागव नृणां काला । अहं मा ऊयनिका । च विजे का मु
 कस्येव । दवीका हंतु वामं । असिनां गान नृ नृ नृ नृ । काधे डमकले
 ववः । कला लीली यद्यप्येव । संहारवप्येव चाहध । तथा काली डमा
 दवी । दवद्वगीनमा मुन । रुड काली महादवी । चर्ममू ७ रुयावरु
 । महा कृष्ण महागर्भक । नमस्तु गकि नृविणी । रुडु वः ४ खनिस्वारानं
 दयालं च कुरुष्वम । स्नानार्थिना महा माय । उतदि कानि वदि रु ।

यस्मिन् दं पठनं कुरुते । तिस्रश्चैव मानवः । पापानि विनिर्गतामान
 श्रीर्गुरुवनि वनेरु ॥ ॥ ॐ निमि वगकि सम वलं महा माया कुरुते स
 मायं ॥ ॥ कुरुष्वम ॥ ॐ वलायधी सकलगीथजलनपूरु । स्वकुरु
 यत्नवसूसा हिरुपुष्पमाला । यत्नवसूसा हिरुविषयमूनिरिः पुसष्टं न
 कुरु मूर्ति निवधकि यूनं नमामि ॥ ॐ ॐ ॐ कुरुष्वम लोमखर्चः पृथुग
 वज्रघनं चैकवकुं शिनरुं । हाता नृणां हिरुषः । त्वहि कलरुवधेन
 रुचन्द्रा कवद्रि । विं गानं विगकर्णं । कलनमिव समा । द्यावदुद्वाक
 बालं । सायं विन्येकनाथं । विपूजनरुयहना । महा कालं नमामि

॥ महाकालया ॥ ॥ कुरुया ॥ कुरुया माविषयं सकल जगदिदं
ववाविषयकं यत्तु विंगकर्णं जटमकतधनं ननु वल्यं कवक्रि
वक्रं कंकालं लुप्तं लहिकल रुवर्णं वाष्टरु संधवंतं स्वर्णं स्व
प्ररुटं उमनूक सहितं कुरुया लं नमामि ॥ ॥ देवीया ॥ उयाद
वीनवमीषिया रुगवती सा नच मावाधिना वक्राय लु मरु ग्ववर्ण
जगता धाणीयस न्नातिवा । रुत्वा लु रु मूय वलिर्न सा नच देवी मू
ना । गान्देवी सततं नमामि सिनसा । सर्वार्थ सिद्धि युदा ॥ ॥ उयाद
वी मधुकेट रुप्रमथनी याचछ मूळकिनी यामाता महिवा सुवक्र

यकवी यावक्रवी जाग्रया । यासा लु रुनि लु रुदे लु जननी या
दवदवा किनी सा देवी ममवक्र दक्रि लु रु वक्रं सदा वलुक्र ॥
॥ ॥ याष्टम्या मविवा सिनारुगवती वृद्धपु वलुदिहि ॥ वक्राया य
मूखा जयादि सकला संधा गिनी मलुने ॥ यष्टी म्यन नधूप य लुकि
वल्या नवम्या विलं संधा फदधमी प्रयान वलिना सा वलुका पातु
व ॥ ॥ इत्यादि लु जयकी शि लुवन रुयक ल्मा हि वंदे लु वा ज
रुत्वा लु प्रारु दे लु पुनत्र विरुगवती वलु मूळ केवी न । रुत्वा न
वक्रवी जं लमसि रुगवती लु रुदे लु नि लु रु सिं रुत्वा जकि

स्नान आहुत समय काय ॥ ॥ ॐ तिष्ठामहाष्टमीपूजाविधिः ॥
॥ ॥ गंगाधरमीकङ्क अरिधर काय विधिः ॥ कल (ग) द क ना
॥ ॐ उं ग उ का नं वायुवीजं तद्रूपविवर्तुं वृज्यादि तद्रूपं कालं
वक्ष्याम्युक्तं तद्रूपविपनमं वद्विबीजं सहं हं वन्दुविनलया
नं निवकमलयनं श्रीवधनागवक्तं दृष्ट्वा कृत्तुं निर्यं दहति
कलमलं मन्त्रं ह्याहियाय ॥ ॥ चन्दन ॥ ॐ उं चन्दनं लविर्गु
धं पविर्गु पापनाशनं । आ पदाह नन निर्यं सक्तो सुकतीवर्द्धनं
॥ ॥ सिद्ध ॥ ॐ उं ग सिन्धुवती च सो रा ग्यं वगी कवध मूकमं स्य

मञ्जयमाश्रानि सर्वसंपत्तिदायकं ॥ ॥ मारुत ॥ ॐ उं ग रुद्ररूप
स्वरूपं उला कं मारुतानक । अत्युक्तं ललाटय मारुतं हय
म्यहं ॥ ॥ सुरु ॥ ॥ आनी धाद ॥ ॐ उं ग अश्वपूरुषं गतं यदं रुद्रवती
चेतन्युपात्मका स्नानेकावद्रुतामथ रुद्रविहना बुद्धामबीविर्गुयं ॥
रास्ये वैवर्ण्यं वक्तं ननु गतं श्रीयानि नीयधकं चला कान्तिमविचि
दं क ममलं मां पातु निर्यं कजा ॥ ॥ विधिः ॥ समय काय ॥ ॥
आवणयाय ॥ ॐ उं ग गङ्गा नद सुव (ग) रुद्र सुरुत नं गतं लयः । वक्तु
वक्तु मह गति धूनवा विजयाय व ॥ ॐ उं ग नैर्गती सुधा नायं गतु